International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

राज्यों की राजनीति में क्षेत्रीय दलों की भूमिका

मोनिका
एम.ए., एम.फिल, एवं नेट (राजनीति विज्ञान)

शोध आलेख सारः वस्तुतः भारतीय संविधान में अनुच्छेद 19 के अन्तर्गत समुदाय या संघ बनाने की जो आजादी दी गई है, उसके तहत भारत की दलीय व्यवस्था विकसित हुई है और इसमें क्षेत्रीय दलों की एक बड़ी संख्या उभरकर आई है। जब पहले आम चुनाव हुए तो उस समय 14 राष्ट्रीय तथा 50 राज्य स्तर के दल थे, परन्तु 2014 में राष्ट्रीय दलों की संख्या मात्र 6 रह गई और इस दौरान बड़ी संख्या में क्षेत्रीय दलों ने चुनावी अखाड़े में कदम रखा। इस बार क्षेत्रीय दलो का वोट प्रतिशत तो अधिक कम नहीं हुआ लेकिन भारतीय जनता पार्टी को छोड़कर अधिकांश राष्ट्रीय दलों का जनाधार खिसक गया। अतः इस सत्य को नकारा नहीं जा सकता कि 1989 के बाद गठबंधन की राजनीति के युग में क्षेत्रीय दलों की भूमिका राष्ट्रीय राजनीति के साथ–साथ राज्यों की राजनीति में भी प्रभावी रही है। प्रस्तुत शोध पत्र भारत के प्रमुख क्षेत्रीय दलों की विभिन्न राज्यों की राजनीति में भूमिका पर प्रकाश डालता है।

मूलशब्दः क्षेत्रीय दल, क्षेत्रवाद, जनाधार, राष्ट्रीय दल, गठबंधन की राजनीति।

भूमिकाः वर्ष 2014 में हुए लोकसभा के चुनाव में क्षेत्रीय दल अपनी राजनीतिक पहचान कायम रखने में सफल रहे। परन्तु कांग्रेस की ऐसी कमजोर स्थिति पहले कभी नहीं देखी गई। इस चुनाव में शिवसेना को 18, अकाली दल को 4, आम आदमी पार्टी को 4, अन्ना द्रमुक को 37, तेलंगाना राष्ट्रीय समिति को 11, तेलगुदेशम को 16, वाई.एस.आर.सी. को 9, समाजवादी पार्टी को 5 तथा तृणमूल कांग्रेस को 34 स्थानों पर विजय मिली। यदि इस चुनावी जनादेश का पूर्ववर्ती चुनावी जनादेशों से

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

तुलनात्मक अध्ययन किया जाए तो यह बात स्पष्ट होती है कि क्षेत्रीय दल इस बार भी मजबूत स्थिति में रहे। इसी तरह कई राज्यों में हुए विधानसभा चुनाव में भी क्षेत्रीय दल अकेले या गठबंधन की राजनीति के तहत सरकार बनाने में सफल रहे। यद्यपि उत्तरप्रदेश विधानसभा चुनाव – 2017 में समाजवादी पार्टी केवल 47 सीटों पर सिमट गई। यह उत्तरप्रदेश की राजनीति में एक क्रांतिकारी घटना मानी जाती है। इसी तरह पंजाब से भी अकाली दल का सफाया हो गया। इसके बावजूद हम राज्यों की राजनीति में क्षेत्रीय दलों की प्रभावी भूमिका को नकार नहीं सकते। इस सन्दर्भ में एक विवेचन निम्न प्रकार से प्रस्तुत है:–

- **समाजवादी पार्टी:–** इस दल की स्थापना 1992 में जनता दल (एस) से अलग मुलायम सिंह यादव के नेतृत्व में हुई थी और यह दल राममनोहर लोहिया के समाजवादी आदर्शों पर चलने की बात करता है। 1993 के विधानसभा चुनाव में यह दल बहुजन समाजवादी पार्टी के साथ मिलकर चुनावी अखाड़े में उतरा था और सरकार बनाने में सफल रहा था। इसी तरह 2004 के लोकसभा चुनाव में इसे 36 सीटें मिली थी और केन्द्र की गठबंधन सरकार में यह दल शामिल रहा। 2012 के विधानसभा चुनाव में यह दल पूर्ण बहुमत की सरकार बनाने में सफल रहा, परन्तु 2014 के लोकसभा चुनाव में इसका जनाधार केवल 5 सीटों तक रह गया। आगे चलकर फरवरी–मार्च 2017 में हुए उत्तरप्रदेश विधानसभा चुनाव के अवसर पर यह दल 47 सीटों पर सिमट गया और भारतीय जनता पार्टी के आवेग ने इस दल का जनाधार समेट दिया।
- **इनेलो:–** यह हरियाणा का प्रमुख क्षेत्रीय दल है और इसकी स्थापना 3 अक्तूबर 1997 को हरियाणा लोकदल के रूप में चौधरी देवीलाल के प्रयासों से हुई थी। लेकिन निर्वाचन आयोग की आपति के कारण इसका नाम हरियाणा राष्ट्रीय

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

लोकदल रख दिया गया तथा 25 सितम्बर 1998 को इसे इनेलो (इंडियन नेशनल लोकदल) का नाम दिया गया। फरवरी 2000 में हरियाणा विधानसभा के चुनाव में इसे अकेले ही पूर्ण बहुमत मिला तथा हरियाणा में इसकी सरकार बनी। 2005 तथा 2009 के विधानसभा चुनाव में यह विपक्ष की भूमिका निभाने की स्थिति में रहा। 2014 में हुए हरियाणा विधानसभा चुनाव में इसे केवल 19 सीटें मिली और आज यह दल हरियाणा का प्रमुख विपक्षी दल है।

- **अकाली दलः–** यह पंजाब का क्षेत्रीय दल है जो लम्बे समय से पंजाब की राजनीति को प्रभावित करता रहा है। प्रारम्भ में इस दल ने पंजाबी सूबे की भी मांग की थी और सिखों के हितों के लिए कई आंदोलन भी किए थे। 1969 में इसने जनसंघ के साथ मिलकर पहली बार पंजाब में सरकार बनाई थी। आगे चलकर 1977 में पुनः जनता पार्टी के सहयोग से इसकी पंजाब में सरकार बनी। 1985 के पंजाब में हुए विधानसभा चुनाव में फिर से अकाली दल की सरकार बनी। 1990 के दशक में इस दल में विभाजन हो गया और प्रकाश सिंह बादल के नेतृत्व में इस दल को संगठित किया गया। 2004 के लोकसभा चुनाव में इसे 8 सीटें मिली। 2009 तथा 2014 के लोकसभा चुनाव में यह दल 4 सीटों पर सिमट गया। चूंकि 2007 तथा 2012 के विधानसभा चुनाव में यह दल पुनः पंजाब में सत्तारूढ हुआ। लेकिन फरवरी–मार्च 2017 में हुए विधानसभा चुनाव में इस दल का जनाधार 15 सीटों तक रह गया।
- **आम आदमी पार्टीः–** इस दल का उद्भव 2013 में दिल्ली के जंतर–मंतर पर समाजसेवी अन्ना हजारे द्वारा चलाए गए भ्रष्टाचार विरोधी आन्दोलन से हुआ है। यह दल 2013 में प्रथम बार अरविन्द केजरीवाल के नेतृत्व में चुनावी अखाड़े में उतरा और 28 सीटें जीतने में सफल रहा। इसने कांग्रेस के साथ मिलकर

गठबंधन सरकार का निर्माण किया, परन्तु यह सरकार 49 दिन के बाद गिर गई। इसके बाद लम्बे राजनीतिक शून्य की स्थिति में दिल्ली के मतदाताओं ने पुनः 7 फरवरी 2015 को दिल्ली विधानसभा की 90 सीटों के लिए मतदान किया। इस बार यह दल प्रचण्ड बहुमत के रूप में 67 सीटें जीतने में सफल रहा और दिल्ली में इस दल की सरकार बनी। 2014 के लोकसभा चुनाव में यह दल दिल्ली में 1 भी सीट नहीं जीत सका। इसे केवल पंजाब में 4 सीटें मिली। इस दल ने फरवरी – मार्च 2017 में हुए पंजाब विधानसभा चुनाव में भी भाग लिया और 20 सीटें जीतने में सफल रहा।

- **नेशनल कांफ्रेसः–** यह दल जम्मू–कश्मीर की राजनीति में लंबे समय से सक्रिय है। चूंकि मुस्लिम कांफ्रेस के नाम से इसकी स्थापना 1930 में ही हो चुकी थी, परन्तु 1938 में इसका नाम बदलकर नेशनल कांफ्रेस कर दिया गया। शुरूआती दौर में इस दल ने कांग्रेस के साथ मिलकर राजनीतिक गतिविधियों को जारी रखा और जम्मू कश्मीर में सरकार भी बनाई। 1977 में हुए विधानसभा चुनाव में यह दल पूर्ण बहुमत की सरकार बनाने में सफल रहा। 1983 में फिर से जम्मू–कश्मीर में इसी दल की सरकार बनी। 1996 के विधानसभा चुनाव में भी यह दल पुनः सत्तारूढ हुआ और 2008 के विधानसभा चुनाव में इसने कांग्रेस के साथ मिलकर फिर से गठबंधन सरकार बनाई। परन्तु 2014 के विधानसभा चुनाव में इसका जनाधार केवल 15 सीटों तक सिमट गया और आज यह दल जम्मू कश्मीर की राजनीति में प्रमुख विपक्षी दल की भूमिका निभा रहा है।
- **असम गण परिषदः–** इस दल का जन्म 1985 में असम में हुआ और इस वर्ष असम विधानसभा चुनाव में 64 सीटें लेकर यह दल सरकार बनाने में सफल रहा। 1995 में असम विधानसभा चुनाव में पूर्ण बहुमत मिलने के बाद इस दल की पुनः

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

सरकार बनी। 2014 में हुए लोकसभा चुनाव में इस दल को कोई भी सीट नहीं मिली। इसी तरह मई 2016 में हुए विधानसभा चुनाव में यह दल बहुमत से दूर रहा और आज यह असम विधानसभा में विपक्ष की भूमिका निभा रहा है।

- **द्रविड़ मुनेत्र कड़गम (द्रमुक):–** यह दल तमिलनाडू की राजनीति में लम्बे समय से सक्रिय है। इसकी स्थापना 1949 में हुई और 1962 के विधानसभा चुनाव में इसे 50 सीटें मिली। 1967 में हुए विधानसभा चुनाव में यह दल 138 सीटें लेकर सरकार बनाने में सफल रहा। 1972 में इस दल में विखण्डन होकर नये दल अन्ना द्रमुक की उत्पति हुई। इससे इस दल का जनाधार नये दल की तरफ खिसकने लग गया। लेकिन 1989 के विधानसभा चुनाव में यह दल पूर्ण बहुमत लेकर सरकार बनाने में सफल रहा। 1996 के विधानसभा चुनाव में इस दल ने तमिल मनीला कांग्रेस के साथ मिलकर चुनाव लड़ा और इसने गठबंधन सरकार बनाई। आगे चलकर 2006 में हुए विधानसभा चुनाव में यह दल पुनः सत्तारूढ़ हुआ, लेकिन 2016 के विधानसभा चुनाव में यह दल सत्ता से बाहर हो गया और 2014 में हुए लोकसभा चुनाव में इसे कोई भी सीट नहीं मिली।
- **अन्ना द्रविड़ मुनेत्र कड़गम (अन्ना द्रमुक):–** इस दल की स्थापना तमिलनाडू में 1972 में हुई। 1991 में हुए विधानसभा चुनाव में यह दल सरकार बनाने में सफल रहा। आगे चलकर मई 2001 में हुए विधानसभा चुनाव में इस दल ने तमिलनाडू में पुनः सरकार बनाई। इसी तरह 2011 में तमिलनाडू में फिर से इसी की सरकार बनी। 2014 में हुए लोकसभा चुनाव में भी यह दल मजबूत स्थिति में उभरा और 37 सीटों पर विजय प्राप्त की। 2016 के विधानसभा चुनाव में फिर से तमिलनाडू में इसी दल की सरकार बनी। यद्यपि सुश्री जयललिता की मृत्यु के बाद यह दल निरन्तर नेतृत्व की समस्या से जूझ रहा है।

- **शिवसेनाः–** यह पार्टी महाराष्ट्र की राजनीति में 1966 से सक्रिय है। यह दल मराठा जाति की राजनीति करता है और उत्तर भारत के राज्यों के विरूद्ध जहर उगलता रहता है। इस दल की राजनीतिक स्थिति प्रारम्भ में काफी कमजोर रही, परन्तु 1995 के विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी के साथ मिलकर चुनाव लड़ने से यह दल सरकार बनाने में सफल रहा। 1996 के लोकसभा चुनाव में भी यह दल 15 सीटों पर सफल रहा और यही स्थिति 1999 के लोकसभा चुनाव में भी रही। 16वीं लोकसभा के चुनावी अवसर पर यह दल 18 सीटें जीत सका। परन्तु आज यह दल भारतीय जनता पार्टी के खिलाफ भी जहर उगलता रहता है और जातिवाद का जहर राजनीति में घोलने से भी परहेज नहीं करता।
- **तेलगुदेशम :–** यह दल आन्ध्रप्रदेश का प्रमुख दल माना जाता है। 1983 के विधानसभा चुनाव में यह दल पूर्ण बहुमत के साथ जीतकर सरकार बनाने में सफल रहा और 1984 के लोकसभा चुनाव में भी इसे 28 सीटें मिली। मार्च 1985 में हुए विधानसभा चुनाव में यह दल फिर से सरकार बनाने में सफल रहा। 1994 में फिर से आन्ध्रप्रदेश में इसी दल की सरकार बनी। 2014 में हुए विधानसभा चुनाव में यह दल पुनः मजबूत स्थिति में उभरा और आज आन्ध्रप्रदेश में इसी दल की सरकार है।

सारांशः– अतः राज्यों की राजनीति के साथ–साथ केन्द्र की राजनीति में भी क्षेत्रीय दल प्रभावी भूमिका में रहे हैं। वर्तमान मोदी सरकार में भी 12 क्षेत्रीय दल शामिल हैं। 2015 में बिहार विधानसभा चुनाव में भी क्षेत्रीय दल प्रमुख राष्ट्रीय दल भारतीय जनता पार्टी को चुनौती दे चुके हैं, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं हैं कि आने वाला समय क्षेत्रीय दलों के लिए अधिक बुरा है। आज आन्ध्रप्रदेश में प्रमुख क्षेत्रीय दल तेलंगाना राष्ट्रीय समिति की सरकार है और 2014 के लोकसभा चुनाव में भी इन

दलों की सहभागिता लगभग 30 प्रतिशत है। 1989 के बाद कई क्षेत्रीय दल मजबूत स्थिति में उभरे हैं और यह दल क्षेत्रीय दलों के लिए एक गंभीर चुनौती बने हुए हैं, लेकिन सहकारी संघवाद की दृष्टि से इनकी सुद्ढ राजनीतिक स्थिति ही राष्ट्रीय दलों की तानाशाही पर अंकुश लगा सकती है। अतः संवैधानिक सीमाओं में रहकर ही क्षेत्रीय दलों की सकारात्मक भूमिका की अपेक्षा राजनैतिक पंडितों द्वारा की जाती है और संसदीय लोकतंत्र के भविष्य के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है।

सन्दर्भः–

- राजेश जैन, **क्षेत्रीयवाद और भारतीय राजनीति,** भावना प्रकाशन, दिल्ली, 2004.
- घनश्याम चौहान, **भारतीय राजनीति और सरकार,** सुमित प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005.
- अरूण नेहरू, ''छोटे दलों का बड़ा खेल'', **दैनिक जागरण,** पानीपत, 07 जुलाई , 2006.
- प्रभात किरण, ''रीजलन पॉलिटिकल पार्टीज सिन्स 1989'', **थर्ड कॉन्सेप्ट,** वॉल्यूम 18 . (242), अप्रैल 2007.
- संजय गुप्त, ''गठबंधन राजनीति के खतरे'', **दैनिक जागरण,** पानीपत, 26 अगस्त, 2007.
- राजीव शुक्ला, ''घातक क्षेत्रीय संकीर्णता'', **दैनिक जागरण,** पानीपत, 09 फरवरी, 2008.
- विपल्व, **भारतीय शासन एवं राजनीति,** सन्दर्भ पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2010.
- रजनी कोठारी, **भारत में राजनीति**, ओरियंट ब्लैक स्वॉन, नई दिल्ली, 2015.
- बी.एल.फाडिया एवं पुखराज जैन, **भारतीय शासन एवं राजनीति**, साहित्य भवन आगरा, 2016.
- **दैनिक भास्कर,** रोहतक, 12 मार्च 2017.